Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 5, August-2021, ISSN 2230-7540

मलिक मोहम्मद जायसी और उनकी रचनाएँ का अध्ययन

Neha Rao*

PhD Scholar, Indian Language Centre, Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

सार – *हिन्दी साहित्य के भक्ति काल के पूर्व भारत में अनेक प्रकार के मतमतान्तर, सम्प्रदाय, उप सम्प्रदाय आ दि प्रचलित थे। शैव, शाक्त, वैष्णव, जैन और नवागत इस्लाम आदि धर्म विभिन्न मानव समहों के रूप में चारों और झाए थे। सिद्ध और नाथ पंथ के योगी अने चमत्कारों द्वारा सता को प्रभावित और कभी-कभी आतंकित करने का भी प्रयत्न करते रहते थे। बौद्ध धर्म अपने बा ह्या चारों और नाना प्रकार की तांत्रिक उपासना-पद्धतियों के कारण विशृंख लित और निष्प्रभ हो चुका था। जैन धर्म बा ह्या चारों और कर्म-काण्डों में फंस राजस्थान, मालवा, उसके आसपास, गुजरात आ दि प्रदेशों में अपना अस्तित्व साए हुए था। उसकी उन्नत चा रिक परम्परा धमिल हो गयी थी। शाक्त, शंव और वष्णव इतने अस हि हो गये थे कि एक दूसरे का विरोध करने में ही अपनी सारी शक्ति लगाए रखते थे। बौद्धों की वाममार्गी व्यक्तिगत साधता ने भी विक्त रूप धारण कर लिया। इसमें सभी प्रकार के अतिशय भोगों द्वारा वैराग्य भावना उत्पन्न करने का सिद्धान्त प्रमुख माना गया था। इसने खुले व्यभिचार, मदिरापान, मास-भक्षण आदि को खूब बढ़ावा दिया। इस लिए आगे चलकर नाथपंथी साधकों ने जीका की पवित्रता को प्रधान मान नारी भोग का पर्ण बहिष्कार कर दिया। इन लोगों ने वाममार्गी भोग-प्रधान साधना-पद्धतियों का पूर्ण बहिष्कार कर एक ऐसी पवित्र, निर्मल और सात्विक साधना पद्धति का प्रवर्तन किया जिसने हिन्दी के संत और सफी कवियों को प्रभा वित किया।*

कुंजीशब्द - मलिक मोहम्मद जायसी, रचनाएँ

----------X----------

प्रस्तावना

भारतीय चिन्तन में चेतना को मन दी एक वृत्ति के रूप में स्वीकार किया गया है जिससे व्यक्ति को अनुभूतिया होती हैं। चेतना शब्द और उसमें व्याप्त अर्थ सूत होते हुए भी जब व्यक्ति, समाज और साहित्य के सन्दर्भ में आता है तो वह मूर्त रूप से व्याख्या यित होने लाता है। हिन्दी साहित्यकोष के असार - चैतन मानस की विशेषता चेतना है। अर्थात् वस्तुओं, विषयों, व्यवहारों का ज्ञान। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि चेतना मन की वह शक्ति या वृत्ति है जिससे जीव को आन्तरिक अनुभूतियों, भावों, क्विारों आदि तथा बाह्य घटनाओं, तत्वों या बातों का शुभव अधवा भान होता है।

मनुष्य की चेतना जिस सामाजिक अन्तस्थता मैं विकसित होती है और वह जिन युगीन सापयों से संस्कारित होती है, उसी की संचित अभि यह तो निश्चित ही है कि स्थल जगत को छोड़ कर मनुष्य नहीं रह सकता और न अपने देश और काल की सीमाओं से सम्पृक्त रह कर कोई शिल्प सृष्टि कर सकता है। इसलिए साहित्य भी स्थूल जगत से सम्पृक्त हो कर नहीं रह सकता। इसी बात को टामस वार्टन ने तार्किक आधार देते हुए कहा है कि 'साहित्य की यह अनूठी विशेषता है कि वह हर युग की। विशिष्टताओं को बहुत सच्चाई से अंकित करता है। आचार व्यवहार के नितात चित्रात्मक और अभिव्यंजना पूर्ण पहलुओं को जिलाए रखता है। कहने का आशय यह है कि साहित्य मानव जाति का मानस होता है। समाज में ही मनुष्य के भावों की अभिव्यक्ति परिष्कृत होकर साहित्य का आधार मती है। उसकी चेतना जीवन की ही चैतना होती है।

इसलिए सा हित्य मानव-जीवन से सीधा उत्पन्न होने के कारण सीधे समाज और मानव-जीम को प्रभावित करता है। डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार - जीवन ही साहित्य का मेरुदण्ड है; जो स्थूल और सूक्ष्म की अन्त ग्रंथियों से निर्मित है। यही कारण है कि जीवन से दूर रहने वाला साहित्य महत्वहीन हो जाता है। समाज और संस्कृति के बहुरंगी तेवर तथा समाज की आशा-आकाएं ही साहित्य के उपजीव्य हैं। इस प्रक्रम में साहित्य को समाज और संस्कृति का जिम्मेदार प्रवक्ता भी

www.ignited.in

कहा जा सकता है। साहित्य सहर मैं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस बात को प्रमुखता से रेखाक्ति किया कि - जो साहित्य अविस्मरणीय दृढ़ता चरित्रों की सृष्टि नहीं कर सकता, जो मानव चरित्र को मषित और चालित करने वाली परिस्थितियों की उम्भावना नहीं कर सकता और मनुष्य के सुख-दुःस को पाठक के सामने हस्तामलक नहीं जा सकता वह बड़ी सृष्टि नहीं कर सकता।

मलिक मोहम्मद जायसी

मलिक मोहम्मद जायसी की जन्म तिथि और इस स्थान को लेकर आज ही मतभेद हैं। इनका जन्म वर्ष 1500 में उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के जायस नामक कस्बे पर हुआ था। मलिक मोहम्मद के नाम के पीछे जायसी शब्द उपनाम की तरह उपयोग किया जाता है। इनके पिताजी का नाम मलिक राजे अशरफ था। वे एक मामूली जमींदार और किसान पृष्ठभूमि से थे।

मलिक मोहम्मद ने बहुत कम उम्र में अपने पिता को खो दिया था और उसके कुछ सालों बाद अपनी माँ के मातृत्व से भी वंचित होना पड़ा। बचपन में एक हादसे के कारण मलिक मोहम्मद एक आँख से अंधे हो गए थे और चेचक की बीमारी के कारण चेहरा भी खराब हो गया था। मलिक मोहम्मद जायसी के सात पुत्र थे और दुर्घटना में उनके सातों पुत्रों की मृत्यु हो गई थी। जिसकी बाद ही इन्होनें अपना गृहस्थ जीवन त्याग दिया और सूफी संत बन गए।

उनके नाम में जायसी शब्द का प्रयोग, उनके उपनाम की भांति, किया जाता है। यह भी इस बात को सूचित करता है कि वे जायस नगर के निवासी थे। इस संबंध में उनका स्वयं भी कहना है-

जायस नगर मोर अस्थानू।

नगरक नांव आदि उदयानू।

तहां देवस दस पहुने आएऊं।

भा वैराग बहुत सुख पाएऊं॥

इससे यह पता चलता है कि उस नगर का प्राचीन नाम उदयान था, वहां वे एक पहुने जैसे दस दिनों के लिए आए थे, अर्थात उन्होंने अपना नश्वर जीवन प्रारंभ किया था अथवा जन्म लिया था और फिर वैराग्य हो जाने पर वहां उन्हें बहुत सुख मिला था। जायस नाम का एक नगर उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में आज भी वर्तमान है, जिसका एक पुराना नाम उद्याननगर 'उद्यानगर या उज्जालिक नगर' बतलाया जाता है तथा उसके कंचाना खुर्द नामक मुहल्ले में मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म-स्थान होना भी कहा जाता है।[1], कुछ लोगों की धारणा कि जायसी की किसी उपलब्ध रचना के अंतर्गत उसकी निश्चित जन्म-तिथि अथवा जन्म-संवत का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता। एक स्थल पर वे कहते हैं,

भा अवतार मोर नौ सदी।

तीस बरिख ऊपर कवि बदी॥

जिसके आधार पर केवल इतना ही अनुमान किया जा सकता है कि उनका जन्म संभवतः 800 हि. एवं 900 हि० के मध्य, तदनुसार सन 1397 ई० और 1494 ई० के बीच किसी समय हुआ होगा तथा तीस वर्ष की अवस्था पा चुकने पर उन्होंने काव्य-रचना का प्रारंभ किया होगा। पद्मावत का रचनाकाल उन्होंने 947 हि० 6, अर्थात 1540 ई० बतलाया है। पद्मावत के अंतिम अंश (653) के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि उसे लिखते समय तक वे वृद्ध हो चुके थे।

मलिक मोहम्मद जायसी और उनकी रचनाएँ

जायसी के शिक्षक शेख मुबारक शाह बोडले थे, जो शायद सिमनी के वंशज थे। इतिहासकारों के अनुसार जायसी के ग्रंथो की संख्या 20 बताई जाती है परन्तु इनमें से "पद्मावत" "अखरावट" "आखिरी कलाम" "कहरनामा" और "चित्ररेखा" पांच ही उपलब्ध हैं। इनमे से पद्मावत सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। जायसी ने बाबर के शासनकाल में ही आखिरी कलाम (1529-30) और पद्मावत (1540-41) की रचना की थी।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार अमेठी के राजा रामसिंह ने पद्मावत के कुछ अंशों को सुनने के बाद अपनी अदालत में आमंत्रित किया था। कुछ लोगों का यह भी मानना था कि मलिक मोहम्मद जायसी के आशीर्वाद से ही राजा रामसिंह को दो पुत्रों की प्राप्ति हुई थी।

मलिक मोहम्मद जायसी हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। वे अत्यंत उच्च कोटि के सरल और उदार सूफ़ी महात्मा थे। हिंदी साहित्य में तुलसीदास और सूरदास के समान ही उनका पर्याप्त महत्त्व है। वे प्रेम की पीर के कवि माने जाते हैं। जायसी के जन्म के संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। मसनवी शैली में रचित उनकी अमर कृति पद्मावत में शाहे वक्त के साथ-साथ कवि का भी परिचय दिया गया है। अंतः साक्ष्य के आधार पर जायसी का जन्म 900 हिजरी के लगभग हुआ माना जाता है। जायसी ने अपनी रचना आखिरी कलाम में एक स्थान पर लिखा है-

www.ignited.in

तीस बरस ऊपर कवि बदी।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि जायसी का जन्म 900 हिजरी अर्थात 1492 ई. के आसपास हुआ। इनका जन्म स्थान जिला रायबरेली में जायस नगर था। जायस में जन्म लेने के कारण ही यह जायसी कहलाए। अपने जन्म स्थान के संबंध में वे लिखते हैं-

जायस नगर मो अस्थानु तहाँ आई कवि कीन्ह बखानु।

मलिक इनकी पैतृक उपाधि थी। इनके पिता का नाम मलिक शेख में ममरेज या मलिक शेख अशरफ था। इनके गुरु सैयद अशरफ तथा मुहिउद्दीन थे। अपने गुरु के संबंध में जायसी लिखते हैं-

सैय्यद अशरफ पीर हमारा।

जेहि मोहि पंथ दीन्ह उजियारा।

जायसी निजामुद्दीन औलिया के वंशज थे। जायसी प्रतिभा के धनी परंतु शरीर के कुरूप थे। अंतः साक्ष्य के अनुसार जायसी एक नेत्र से विहीन तथा एक कान से रहित थे। एक जनश्रुति के अनुसार शेरशाह सूरी ने इनकी कुरूपता का मजाक उड़ाया था तब इन्होंने बड़े शांत स्वभाव से शेरशाह को जवाब दिया-मोहि का हंससि, के कोहरिहं? अर्थात तुम मुझ पर हंसे हो या उस कुम्हार पर अर्थात ईश्वर पर जिसने मुझे बनाया है। शेरशाह इस बात से अत्यंत लज्जित हुए और इसके बाद उन्होंने जायसी का अत्यधिक सम्मान किया। अमेठी नरेश रामसिंह भी इन्हें अपना गुरु मानते थे। ऐसा माना जाता है कि अमेठी के आसपास के जंगलों में एक शिकारी के तीर लगने से जायसी का निधन हुआ। इनकी मृत्यु सन् 1542 ईस्वी के आसपास मानी जाती है। अमेठी नरेश ने जायसी की यहीं पर एक समाधि बनवा दी जो अब भी मौजूद है।

जायसी की छह प्रमुख रचनाएं मानी गई हैं जिनमें 'आखिरी कलाम', 'पद्मावत', 'अखरावट', 'मसलनामा', 'कहरनामा' तथा 'कन्हावत' है। 'पद्मावत' इनकी कीर्ति का आधार स्तंभ है। इस महाकाव्य में चित्तौड़ के राजा रतनसेन तथा सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का वर्णन किया गया है। जायसी की काव्यगत विशेषताएं इस प्रकार है-

इतिहास और कल्पना का अद्भुत मिश्रण

जायसी ने अपने काव्य में इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय किया है। 'पद्मावत' महाकाव्य इसका प्रमाण है। इस काव्य का पूर्वार्ध यदि कल्पित है तो उतरार्द्ध ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। इसमें रतनसेन, अलाउद्दीन, नागमती, पद्मावती आदि ऐतिहासिक पात्र हैं तथा अन्य पात्र काल्पनिक है। घटनाओं के वर्णन में कवि ने अपनी कल्पना शक्ति का अद्भुत परिचय दिया है। अलाउद्दीन के चित्तौड़ पर आक्रमण की ऐतिहासिक घटना का सुंदर वर्णन हुआ है। पद्मावत का सिंहलद्वीप वर्णन कवि की कल्पना शक्ति कहा अद्भुत उदाहरण है-

सब संसार परथ मैं आए सातौं दीप।

एक दीप नहिं उत्तिम सिंघलदीप समीप

लोक संस्कृति में लोक जीवन का वर्णन

जायसी का काव्य लोक संस्कृति और लोक जीवन का बहुत सुंदर वर्णन करता है। उन्होंने अपने काव्य में हिंदू-मुस्लिम एकता का तो समर्थन किया ही है, साथ ही भारतीय लोक संस्कृति, तीज-त्योहार, आदर्श, अंधविश्वास, जादू-टोना, मंत्र-तंत्र, तीर्थ-व्रत आदि का भी वर्णन किया है। उन्होंने हिंदू धर्म के सिद्धांतों, विवाह-संस्कार, रहन-सहन का जीवंत वर्णन किया है। पद्मावत की कथा पूर्ण रूप से भारतीय पृष्ठभूमि पर आधारित है। उनके नारी पात्र भारतीय आदर्श नारी का प्रतीक है।

लौकिक प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम की व्यंजना

पद्मावत केवल जायसी का ही नहीं बल्कि हिंदी साहित्य का सफल एवं लोकप्रिय महाकाव्य है। इसमें कवि ने लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। यह महाकाव्य सूफी मत के सिद्धांतों के अनुसार आध्यात्मिक प्रेम को अभिव्यक्त करता है। पद्मावत की नायिका अल्लाह का प्रतीक है तो रतन सेन साधक है-

रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती।

रतन पदारथ मानिक मोती॥

जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी।

तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी॥

अध्ययन के उद्देश्य

1. मलिक मोहम्मद जायसी और उनकी रचनाएँ का अध्ययन
2. कन्हाक्त में अभिव्यक्त अन्य देवी-देवताओं की भक्ति संबंधी चेतना का अध्ययन

साहित्य की समीक्षा

अब्दुल वा हिद लिगामी इकायके (2014) जीवन, समाज और साहित्य की परस्परता के मध्य ही उन अन्त पाणों को अभिव्यक्ति मिलती है जो मनुष्य ने भोगे हैं, कि आशाओं आकाशाओं, कल्पनाओं में मानव जिया है। सभाति के स्तर पर हो या बाहय घटनाओं की उपस्कृति का क्तिान, साहित्य अपने मौलिक चरित्र में युगीन अर्न्तद्वन्द्वी से उद्भूत केतना ही है। या यूं कहें कि साहित्य चाहे सीधे-सीधे सामाजिक सरोकारों और सामायिक प्रतिबद्धताओं की शर्तों को परा न भी करता हो किन्तु वह अपने बुनियादी स्वरूप में सामाजिक सृष्टि है।

डॉ. श्यामनन्दन किशोर (2015) ने समाज, जीवन और साहित्य को त्रिवेणी माना है - 'जीन, समाज और साहित्य का त्रिकोणात्मक सम्बन्ध होता है। वे एक दूसरे को निरंतर प्रभावित करते रहते हैं।

डॉ. असद अली (2016) साहित्य में समाज और संस्कृति की पैठ 'कितनी गहरी होती है, इसका अमान प्रसिद्ध इतिहासविद् प्रो० सतीश चन्द्रा के इस कथन से लगाया जा सकता है - 'समाज के आचार-विवार, चाल-ढाल, उत्थान-पतन का ज्ञान तत्कालीन साहित्य से भली भाति हो सकताहै। और साहित्य एवं समाज के सम्बन्धों के अध्ययन का अच्छा एवं आसान उपाय है कि साहित्यिक रचनाओं को सामाजिक दस्तावेज मानकर अथवा सामाजिक यथार्थ की कल्पित तस्वीर मानकर उनका अध्ययन-मनन किया जाय। अतरू कहा जा सकता है कि साहित्य एक सामाजिक संस्था है। साथ ही साहित्य जीवन की प्रतिच्छवि भी है। साहित्य बहुतांश में सामाजिक होता है। सच कहा जाय तो साहित्य का जन्म कुछ विशेष सामाजिक संस्था औं के आपसी सम्पर्क के फलस्वरूप हुआ -'कवि और लेखक किसी अंश में समाज के प्रतिनिधि होते हैं। और किसी अंश में वै समाज को अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व के आधार पर नये भाव और क्विार प्रदान करते हैं। समाज कवि और लेखकों को बनाता है और लेखक तथा कवि समाज को बनाते हैं। दोनों में आदान-प्रदान तथा क्रिया-प्रतिक्रिया का भाव चलता है। और यही सामाजिक उन्नति का नियामक सूत्र बनता है।

डा0 रामविलास शर्मा (2014) ने भी कहा है कि 'सामाजिक परिस्थितियां ही चिंतन की सीमाएं निश्चित करती हैं। रचनाकार की सामाजिक चेतना उसकी रचना में स्पष्ट दिखाई देती है। अपने आस-पास के सांस्कृतिक पर्यावरण को भी रचनाकार अपनी कृति में 'चित्रित करता चलता है। क्यों कि संस्कृति मानव जीवन के बाहय-आन्तरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा धार्मिक जीका को अभिव्यक्त करती है।

साहित्य और संस्कृति के सम्बन्धों पर चर्चा करते हुए डॉ. शिवकुमार मिश्र का क्या है - वस्तुतः साहित्य और संस्कृति के स्थायी मूल्य वे हैं जिन्हें मनुष्य ने अपने लम्बे सामाजिक जीवन में प्रकृति तथा परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अर्जित और समृद्ध किया है। इसकी स्थिति मनुष्य के इन्द्रियबोध में, उसके भावजगत में और उसके क्विार-जगत में देखी जा सकती है। वस्तुतरू साहित्य के अन्तर्गत मनुष्य के इन्द्रिय बोध, उसके भाव-जगत और उसके विचारजगत की ही अभिव्यक्ति होती है। साहित्य को इसकी समष्टि माना जा सक्ता है। संस्कृति के तत्व भी इन्हीं तीन आयामों पर अभिव्यक्त होकर साहित्य में अपनी स्थिति को सूचित करते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

द्वितीयक स्रोत

माध्यमिक डेटा कई संसाधनों से एकत्र किया जाता है जैसे विभिन्न पुस्तकालयों, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका, और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम, आधिकारिक वेबसाइट

डेटा विश्लेषण

कन्हाक्त में अभिव्यक्त अन्य देवी-देवताओं की भक्ति संबंधी चेतना

जायसी साहित्य के अध्येताओं ने जायसी के पीर और गुरु के सम्बन्ध में ऊहापोह करने के प्रयास तो किए, पर उनमें से किसी ने भी उनकी निन्तन धारा के विकास क्रम की युक्तियुक्त चर्चा नहीं की। इस सम्बन्ध में यहा पर कुछ कहना प्रासंगिक होगा।

जायसी की अब तक जो भी रचनाएं प्रकाश में आयी हैं, उन पर ध्यानपूर्वक विचार करने पर यह तथ्य सामने आता है कि सन् 1528 ई0 से पर्व वे किसी समय जायस आ चुके थे और शेख अशरफ जहांगीर की दरगाह के मुरीद म गये थे। इस समय तक इस्लाम धर्म की परम्परागत रूढ़ियों और 'विश्वासों तक ही उनकी धार्मिक आस्था सीम्ति थी और उन पर उनका अटूट विश्वास था। इसके बाद वे शीघ्र ही भारतीय परम्परा के संतों के संपर्क में आये और इन्हें ईश्वर चिंतन का भारतीय दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। संत संसर्ग के परिणामस्वरूप संतों की ही चिंतनधारा के अनुरूप इन्हीं के रूपक विधानों में उन्होंने कहरानामा' में ईश्वर का गुणगान किया। डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त का कथन है कि 'इस सम्य तक उन्होंने किसी को भी अपना गुरु स्वीकार नहीं किया था अर्थात् किसी से उन्होंने किसी प्रकार की साम्प्रदायिक दीक्षा नहीं ली थी। इसके बाद ही

www.ignited.in

किसी समय उन्होने शेख बुरहान से सूफी चिश्ती सम्प्रदाय के महादेवी पंथ की दीक्षा ली होगी।

जायसी ने भारतीय आध्यात्म के जिन रहस्यों को ढूंढ कर उन्हें जनोपयोगी समझा, उन्हीं का विकास कन्हा क्त' में देखा जा सकता है। एकेश्वरवाद की सैद्धा न्तिक भक्ति और सूफी आग्रहों में दीसित होते हुए भी जायसी ने यदि कन्हा क्त' में अक्तारवाद और बहुदेववाद सैद्धान्तिक स्तर पर भले ही न सही, व्या वहा रिक धरातल पर स्वीकार किया है तो यह मका सूफी मतवाद से हट कर एक नवीन चिंतन ही था जो भारतीय परिवेश में जमीनी अहसास के लिए आवश्यक भी था। यह कला अत्युक्ति न होगा कि जायसी ने कन्हा वत' के माध्यम से दर्शन, धर्मादि पत्रों में समन्वय के नये समीकरणों को गढ़ने में पहल की। मुला दाउद के चांदायन' में राम और कृष्ण का उल्लेख अवश्य मिलता है किन्तु पौराणिक आख्यान को लेकर कथा वस्तु के रूप में ग्रहण करने का स्तुत्य प्रयास जायसी द्वारा पहली बार किया गया। जायसी ने 'कन्हा का' में कृष्ण को तो भगवान विष्णु का अवतार माना ही है, साथ ही उन्होंने अन्य देवी-देवताओं क भी स्पष्टोल्लेख किया है। स्वयं कृष्ण विष्ण के दस अवतारों की चर्चा नन्द से करते हैं

कन्ह कहा रहु जनि पिता। हाँ गोविन्द मोसो को जिता।।

हह हि करत दी ठि खो अहा। मच्छ कच्छ औरूप बराहा।।

हहहि सो बा का रूपी करा। हह हि सत बली राजा करा।।

हंहहि सो नार सिंह बरिया रा। हाना कुस क पैट जै फारा।।

हहहि सो परसुराम पतबा हू। मारा महीं सहया बाहू।।

हंहहि सो श्रीराम औतारा। महीं लंकंपति रावन मारा।।

हंहहि सो नारायन विरंजी। महीं मार काखे दर रंजी।।

हहंहि सो पुरुष कन्ह अब।'

कन्हाक्त में हिन्दू पौराणिक मिथकों एवं वेदो सम्बन्धी चेतना

जिस युग में कन्हाक्त की रचना हुई थी, उसमें कविता के द्वारा धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों तथा सिद्धान्तों के प्रक्ट एवं प्रचार करने की प्रथा थी। कवि कर्म गांण था। धर्म 'निरूपा की प्रधानता थी। इसी प्रक्रिया में सिद्धों, नाथ सम्प्रदाय के यो गियों, कृष्ण भक्तों और राम भक्तों की रचनाओं में कवि के धार्मिक विश्वास और उपासना पद्धति का निरूपण मिलता है। जायसी, अपने आप को इस परिसीमन से पृथक् तो नहीं रख सके किन्तु 'कन्हा कत' के माध्यम से उन्होने इस मिथक को तोड़ने का उपक्रम तो क्या ही है कि किसी खास सम्प्रदाय में दीपित कवि उसी की धर्म साधना का प्रचारक है। उन्होंने अखरा वट' और 'आखरी कलाम' में इस्लाम के प्रति खुलकर आस्था प्रकट की है किन्तु कन्हा वत' में ऐसा न करके उन्होंने अपने धर्म सम्बन्धी आदशों का प्रतिपादन किया है।

जायसी अपने काव्य में दार्शनिक सिद्धान्त अपनी समन्वयात्मक दृष्टि से ग्रहण करते हैं। सूफी चिंताधारा के अतिरिक्त भारतीय चिंताधारा में जैसे - श्रुति-दर्शन, हठ यो गियों, सहजयानी सिद्धों, वेदों, पुराणों की साधना को भी उन्होंने उसमें समा विष्ट किया है।।

जायसी सूफी मुसलमान होते हुए भी भारत के प्राचीन श्रुति-दर्शन से अपरिचित नहीं थे। उनको अपनी पवित्र पुस्तक कुरान के समकक्ष रखते हैं।

वे वेदों को भी कुरान के समान अपौरुषेय मानते हैं। उन्होंने वेदों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए 'पद्मा वत' में कहा है --

वेद पंथ जे नहिं चल हिं, ते भल हिं म माफ।

वेद क्चन मुख साच जो कहा। सां जुग-जुग स्थिर होह रहा।।

इसी प्रकार कन्हा वत' में भी जायसी ने वेदों और पुराणों का उल्लेख किया है --

प्रथम जो भा मानुस के भेसू।

सिरजा असा बिस्नु महसू।।

असा उरझा बेद पुराना।

महा देव माया लिपटाना।।

निष्कर्ष

जायसी ने कन्हा कत के माध्यम से जिस सांस्कृतिक एकता की बात की है, वह प्रदिप्त अथवा थोपी हुई नहीं है, बल्कि वह उस सहज भावभूमि पर संचरित है जिसमें मनुष्य अपनी आत्मा की मुक्तावस्था एवं भेदों से अद की और प्रयाण करता है। महाकवि जायसी ने प्रचलित भारतीय सास्कृतिक और साहित्यिक परम्पराओं से जुड़ने एवं उनका प्रतिनिधित्व करने का प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने सुफी मसन वियों के झुल भण्डार के साथ ही भारतीय जनता के समक्षा प्रेम मार्ग और प्रेम की पीर के ऐसे गदर्श उपस्थित किये, मिका पालन वह किसी

भी प्रचलित सांस्कृतिक या धार्मिक परम्परा के अतिक्रमण किये और आसानी से कर सके। इस प्रकार जायसी ने भारत में भावात्मक एकता के साथ-साथ मिश्रित सास्कृतिक परम्पराओं का भी सूत्रपात किया। जायसी ने अपने साहित्य में हिन्दू कथाओं को लेकर उनमें सूफी सिद्धान्तों को इस तरह गूंथा है कि जिससे हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही उसमें रस ले सके। काव्य शैली इत्यादि में भी भारतीय कविता-काव्य और मसन वियों के ढंग का उन्होंने अदभुत सामंजस्य किया है। बारहमासा और नख सिख वर्णन की भारतीय परम्परा को जायसी ने अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दिया है। बैर, घृणा, भेट और शोषण पर जायसी ने सूफी प्रेम का मरहम लगाकर पारस्परिक प्रेम और सदभाव के माध्यम से हिन्द तथा मुसलमान धर्म को पास लाने का प्रयत्न किया है। पारस्परिक प्रेम और सदभावना ही ईश्वरीय प्रेम और आकर्षण है, यही मूल मंत्र कवि ने अपने साहित्य द्वारा प्रचारित किया है। वस्तुत महाकवि जायसी ने कहावत' में भावात्मक एकता की भावना को अपने समक्ष रखते हुए लोक हृदय की सबसे सवेदनशील भावना - प्रेम के सन्दर्भ में तात्कालिक समाज में प्रचलित विभिन्न मतों, वादों एवं दार्शनिक दृष्टियों में सामंजस्य लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। जायसी की यह समन्वय भावना कन्हा वत' में अभिव्यक्त प्रेम वर्णन, दर्शन, धर्म, संस्कृति और साहित्य शली में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अब्दुल वा हिद लिगामी (2014) इकायके हिन्दी (सुवाद अतहर सास रिजवी) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी वि० सं0 2014
2. डॉ. श्यामनन्दन किशोर (2015) (अव्दुल कददूस गंगोही के रुश्दन मा का अनुवाद) भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ - 1971 ई०
3. डॉ. असद अली (2016) भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव एस०ई०एस) प्रकाश
4. डॉ. रामविलास शर्मा (2014) राजपाल एण्ड संस दिल्ली, 1978 ई०
5. डॉ. उमापति राय चंदेल हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आस्थान भनिनव प्रकाशन, दिल्ली, 1976 ई०
6. कन्हैया सिंह हिन्दी सूफी काव्य में हिन्दू संस्कृति का चित्रण और श्निरूपण भारती भण्डार, इलाहाबाद, पृ0 सं0 1973 ई0
7. डॉ. कमल कुलश्रेष्ठ हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य चौधरी मान सिंह प्रकाशन अजमेर, पृ0 सं0 1953 ई०
8. के दामोदरन भारतीय चिन्तन परम्परा (अवाद श्री श्रीधरन) तृतीय संस्करण - 1982 ई० पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि. दिल्ली-55
9. गुलाव राय भारतीय संस्कृति रवीन्द्र प्रकाशन, ग्वालियर परिवर्धित संस्करण, 1974
10. चन्द्रबली पाण्डेय तसञ्चुफ अथवा सूफी मत सरस्वती मंदिर, सारस प्र0 सं0 1948 ई० सं0
11. जगमोहन वर्मा चित्रावली नागरी प्रचारिणी सभा, काशी वि० सं0 2038
12. डॉ. जयदेव सूफी महा कवि जायसी भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ प्र0 सं0 1966 ई०

Corresponding Author

Neha Rao*

PhD Scholar, Indian Language Centre, Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

www.ignited.in